स. म्रो.िव./फरीदाबाद/161-83/63869.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० म्रानन्द सन्येटिक प्रा० लि०, मथुरा रोड, फरीदाबाद के श्रमिक श्री मुकन्द लाल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामसे में कोई म्रीद्योगिक विवाद है ;

भोर पूकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, श्रव, मौद्यौगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिधसूचना सं. 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादयस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामजा न्यावनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादयस्त मामजा है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री मुक्कन्द लाल की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. श्रो.वि./रोहतक/225-83/63876.—-चूंकि हरियाणा के ,राज्यपाल की राय है कि मैं. हिन्दुस्तान पोटरीज इण्डस्ट्रीज, बहादुरगढ़, (रोहतक) के श्रमिक श्री सुरेन्द्र सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निविष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं. 3864-ए.एस.ओ. (ई)श्रम 70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की घारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—-

क्या श्री सुरेन्द्र सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं.श्रो.वि./हिसार/122-83/63883.—-चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. हिसार टैक्सटाईल मिल्ज, हिसार के श्रमिक श्री रमेश चन्द्र तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक दिवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, झब, श्रौद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं. 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी श्रधिसूचना सं. 3864-ए.एस.श्रो (ई) श्रम 70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त श्रधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे निखा मामला न्यायिनर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है —

क्या श्री रमेश चन्द्र की केवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं.श्रो.वि./श्रम्बाला/276-83/63889.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि श्रोफिसर कमाडिंग मिल्ट्री पैट्रोल डिपो नजदीक घी ग्रोदाम, जी.टी. रोड, श्रम्बाला छावनी के श्रमिक श्री राम नारायण तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक दिवाद है;

श्रीर चूकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निदिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, श्रब, भौद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई वित्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिष्ठभूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20

€

जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधसूचना सं 11495-जी -श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधि-नियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिन ग्रेय के लिए निर्दिश्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रयबा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री राम नारायण की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं॰ म्रो.वि./एफ.डी./162-83/63896.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं॰ गुप्ता इन्जीनियरिंग वर्कस, 15/2, मयुरा रोड, फरोदावाद के श्रमिक श्री विशव दयाल तया उस हे प्रवन्धकों के मध्या इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है;

## भीर बूंकि हरियाणा के राज्यसल विकाद को न्यायतिर्यय हेतु निर्दिष्ट करना वोख्नीय समझते हैं 🚦

इस लिये, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये हरियागा के राज्याग इन के द्वारा सरकारी अधिनूचना सं० 5415-3-अप/68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए, अधिसूचना सं० 11495-जी-अप-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय फरीदाबाद को विवादयस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवादयस्त मामला है या विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :--

नप्रा श्री निशन दयाल की सेवाप्रों का सनापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह कित राहत क्ष् हकदार है?

संगो.वि./एक.डी./163-83/63909. --चूंकि हरियामा के राज्यपाल की राम है कि मैं गुनाडों स्केत मैन्युफैक्चरिंग एण्डु सप्लाई कम्पनी, प्लाट नं ० 60, डी.एल. एक. इस्डस्ट्रीयल ऐरिया, फ्र€राबाद के श्रमिक श्री तेज नारायण चौधरी तथा उसके प्रयन्धकों के मध्य इसमें इसके बाक जिखित मामले में कोई श्रीदोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निर्विष्ट करना वाछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रम, भोद्योगिक विवाद श्रिष्ठिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा श्रदान की गई शक्तियों का श्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीक्षेत्र नता सं० 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जी-अम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त प्रधितियम की धारा 7 के ग्रयोन गठित अन न्यायालय, करीदाबाद को विवादप्रस्त या उन्ने सुवंगत या उन्ने सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याविनर्णंव के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है:—

क्या की तेज नारायण चौधरी की सेशमों का सनायन न्यायोजित तथा ठीत है ? यदि नहीं, तो वह तिस राहत का हकदार है ?

सं शो.वि./एक.डी./169-83/63916.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. ऊवा रैक्टीफार्यर कारपोरेशन इण्डिया (प्रा०) लि०, 12/1, देहली मयुरा रोड़, फरीवाबाद, के श्रीमक श्री दान सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतुं निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए; श्रव, श्रीधोगिक विवाद श्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान गई की श्रावितयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्राधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1953 द्वारा उक्त श्रधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादशस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निदिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादशस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अय वा सम्बन्धित सामला है :--

क्या श्री दान सिंह की सेवाओं का समायन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह कित राहत का हंकदार है ?